RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-09
September-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

बनारस परिक्षेत्र की कविताओं का भाषा शिल्प एक अध्ययन

प्रशांत कुमार बौद्ध

शोधार्थी, राजस्थान केन्द्रीय विश्विद्यालय

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 16 Sep 2019

Keywords
भोजपुरी, बानी, उक्ति–व्यक्ति–प्रकरण, प्रेमपरक, प्राकृत, अपभ्रंश, समर्थ, अभिव्यंजना–शक्तिं, शब्द–सम्पदा, मुहावरों

ABSTRACT

सिद्धों ने प्राकृत भाषा को छोड़कर लोक–भाषाओं में काव्य–रचना की परम्परा आरम्भ की। भोजपुरी कविता का आरम्भिक रूप गोरखनाथ की "बानी" और सिद्ध–नाथ कवियों की रचनाओं में मिलता है। प. दामोदर के उक्ति–व्यक्ति–प्रकरण (12 वीं शताब्दी) में उस समय के भोजपुरी शब्दों का प्रयोग सबसे पहले मिलता है। भोजपुरी के बहुत से गाथा–काव्यों का रचना काल भी वहीं है। उसके बाद कबीर, धरमदास, घरनींदास , गुलालसाहब, मीखा साहब, लक्ष्मी सखी जैसे सन्त कवियों ने अपनी प्रेमपरक रहस्यमयी वाणी से इस परम्परा को समृद्ध किया। इस काल के कवियों की रचनाओं की भाषा देखने से स्पष्ट हो जाता है कि गोरखनाथ के शिष्य भरथरी के समय से ही भोजपुरी ने प्राकृत अथवा अपभ्रंश का साथ पूर्ण रूप से छोड़ दिया था। बनारसी भोजपुरी न केवल समर्थ काव्य–भाषा के रूप में विकसित हो गयी थी, बल्कि अपनी अभिव्यंजना–शक्तिं, शब्द–सम्पदा और मुहावरों आदि से इतनी समर्थ हो गयी थी, कि कबीर आदि की कविताओं पर भी उसका प्रभाव पड़ा ।

'गोरखबानी' में बहुत से ऐसे छन्द है, जिनकी भाषा शुद्ध मोजपुरी है, जैसे –

गगन मंडल में ऊँघा कूवा, तहाँ अमृत का वासा ।
सगुरा होइ सु भरि–मरि पींवै निगुरा जाई पियासा ।।
हबकि न बोलिबा , छबकि न चलिबा धीरै धरिबा पाँव ।
गरब न करिबा सहजै रहिबा भणत गोरख राँव ।।[1]

कबीर दास ने भोजपुरी में प्रचुर काव्य रचना की । एक दोहे में उन्होंने भोजपुरी को स्वयं अपनी भाषा स्वीकार किया है –

बोली हमरी पूरब की, हमें लखे नहीं कोय ।
हमके त सोई लखे, धुर पुरब का होय ॥।

कबीर का व्यक्तित्व अद्भुत है। उनमें इतना विस्तार है कि सारी सरहदें टूट जाती है, हद – अनहद बिला जाते हैं। इन्द्रियों का व्यापार मीतर से संचालित होता है। कबीर में एक ओर "मन मस्त हुआ तो क्या बोले" कीं भरपूर छलकन हैं तो दूसरी ओर प्रचण्ड रोष ।

केवल कबीर ही नहीं उत्तर भारत के तमाम सन्त कवियों ने ज्ञान– प्रेम, भक्ति और निर्गुण की रागिनी को स्वर देने के लिए मोजपुरी भाषा को माध्यम के रूप में अपनाया, जैसे–

खेलत रहलीं बाबा चौपरिया, आई गैलें अनिहार हो ।
पार परोसिन मेटहूं न पवली, डोलिया फँदाये लिंहे जात हो ।।

(धरम दास)

गंग जमुनवां के बिचवा हो बहे झिरहिर नींर
तेहि ठैया जोरल सनेहिया हो हरि ले गइले पीर ।
जोगिया अमर मरे नाहिन हो पुजवल मोरी आस
करम लिखा बर पावल हो गावें पलदू दास।[2]

(पलदू दास)

सतगुरू नावल सबद हिंडोंलवा सुनतहिं मन अनुरागल ।

(मीखा साहब)

बनारसी भोजपुरी अत्यन्त सरस भाषा है। अन्य लोक–भाषाओं की तरह इसमें भी गीत और संगीत का बहुत सुन्दर माहौल है।. मोजपुरी संस्कृति अपने आपमें भाषा–साहित्य कला व सभ्यता के माध्यम से प्रतिबिम्बित करती है। लोक भाषा लोक–संस्कृति की वाहक है।

सामूहिक भावना अभिव्यक्त करने वाली इस भाषा में साधारणीकरण की गजब शक्ति और सामर्थ्य है। तभी तो इस देश की सीमा को लांघकर फिजी, गुआना, मारीशस, सूरीनाम आदि कितने देशों में लालित्य और चेतना के साथ फैली हुई है।

बनारसी भोजपुरी कविता अपने विकास यात्रा के तीसरे चरण में संभावना के कितने दरवाजे खोल दिये हैं। कहीं वह अति कलात्मक, कहीं वह अनलंकृत सहज रूप में, कहीं एकदम ठेठ

टकसाली भाषा के धार के साथ एक नये रूप में मिल रही है।

छन्द–विधान बनावट में बुना एक से एक बढ़िया गीत–नवगीत और विशेष अन्दाज से रचा गजल तो इसमें है ही नया शिल्प–विधान और लय विधान वाला 'फ्री–वर्स' और कविता है जो–कथ्य और प्रभावन्विति में चौंका दे रहीं है। चित्रात्मकता और प्रतीकात्मक संकेत–धागे से बुने कविता में

RRIJM 2015, All Rights Reserved

आज के सरोकार, आशा, आकांक्षा, प्रेम खीझि, कशमकस और लड़ने के लिए नया भाव बोध है।[3]

बनारसी भोजपुरी कविता में प्रकृति के सौन्दर्य को कई स्तरों पर आंका गया है। शुरू से ही भोजपुरी कवि गाँव, खेत, खलिहान और प्रकृति को अपना मूल कथा बनाए हैं। उसके जरिए एक तरफ अपने सौन्दर्य चेतना और रागबोध को प्रगट करने में आसानी है, दूसरी ओर प्रकृति के जरिये मानवीय त्रासदी और विसंगति को उजागर करने में सहायता मिली है। बनारसी भोजपुरी भाषा अपने लोक रंग, लालित्य और प्रखरता के साथ आज भीं हिन्दी की शक्ति को समृद्ध करने में लगी है।

भोजपुरी एक श्रुति प्रधान, लयबद्ध भाषा है। विद्वानों ने लक्ष्य किये है कि लययुक्त भाषा का सम्बन्ध सामूहिक भावना से है। एक ऐसे समाज में जिसकी शक्ति का स्रोत समूह भावना है, लययुक्त भाषा पैदा होती है।

भोजपुरी क्षेत्र विशेष की केवल भाषा नहीं है बल्कि एक संस्कृति है। जिस तरह बंगाली, गुजराती, पंजाबी, उड़िया, तमिल, सिन्धी, नेपाली आदि भाषा व बोलीं के साथ–साथ संस्कृति है। उसी तरह भोजपुरी एक सांस्कृतिक पहचान को पृथक रूप में व्यक्त करती है। भोजपुरी संस्कृति अपने आप में भाषा साहित्य–कला व सभ्यता के माध्यम से प्रतिबिम्बित करती है। लोकभाषा लोक संस्कृति की वाहक है।

मौलिक उद्भावना और मार्मिक भाव–व्यंजना की दृष्टि से कहीं –कहीं भोजपुरी कवि उस ऊँचाई को छू लेता है जहाँ किसी भाषा के सर्वश्रेष्ठ महाकवि का आसन हो सकता है। कुछ उदाहरण देखिए –

प्रसंग है सन् 1857 के भारत के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम का । इधर पगड़ी बांधे, भाला उठाए भोजपुरिया वीर और उधर तोप डटाए, बन्दूक सम्भाले अंग्रेंज कवि कहता है –

जीत के हारइ हारि के जीतई ठांकि के ताल कबऊँ ललकारइ ।
छातिन में चुभि जाई संगीन जवान तबऊँ पग पाछ ना टारई।।
भोजपुरी सरदार लबालब भालन ऊपर टोप उछारई ।
अइसन लागल दीपक वारिके चंडी खड़ी स काजर पारई।[4]
नीचे से ऊपर की ओर जाते लाल रक्त के फाँक,
जैसे – दीया का लौ ऊपर उठ रहा था,
या ऊपर से टोप समेट मस्तक जइसे ढक्कन हो।

इस सवैया का और सब कुछ अगर छोड़ दिया जाय, खाली एक उत्प्रेक्षा देखा जाय, तभी अपना मौलिक उदभावना और सफल बिम्बविधान के बल पर यह बहुत ही उत्कृष्ट कविता कहीं जायेगी ।

एक और सवैया देखिए जिसमें एक नववधु के पति भारत माता के पुकार पर रन में खेलने जा रहा है। उसके जूझने के तरास के सामने तरूआरि का पानी थोड़ा पड़ गया है। नववधू झरोखा से झाँक कर देखती है कि उसका पति सबसे आगे जा रहा है। इस वर्णन में देखा जाय कि अन्तिम पंक्ति में श्रृंगार के वीररस में वैसा मनोहर व्यूह हुआ है–

कइलसि भूई गोहारि जबइ, रन खेलई चला तब मोर परानी
जूझ क लागलि अइसन तास कि थोर परा तरूआरि क पानी
झाँकि झरोखि मइ देखलिऊँ सबसे अगवाँ मँगिया क निसानी
फूलि के छाती भई गज ऊपर, सारन की अँगिया मसकानी।[5]

भोजपुरी कविता में रोमांटिक भावधारा को लम्बे समय तक गति मिली है, लेकिन प्रगतिशील विचारों, दलित–पीड़ित लोगों की व्यथा–कथा, संघर्ष और अवसाद को भी जीवन्त अभिव्यक्ति इस दौर की कविता में दीख पड़ती है। मोती बी. ए. , रामवचिर पांडेय, अर्जुन सिंह 'अशान्त', गहमरीं, सतीश्वर सहाय "सतीश' सुन्दर जी, रामदेव द्विवेदी 'अलमस्त" आदि की मुक्तक और गीत रचनाओं के अलावा प्रबन्ध और खण्डकाव्य सानेट, गजल आदि काव्य विधाओ के भी समृद्ध रूप देखने को मिलते है। भोजपुरी कविता अपने विकास क्रम में हीं विविध रूपाकार और शिल्प में सृजित हुई है।

भोजपुरी भाषा अपने मुहावरों और शब्दों की व्यंजक शक्ति के कारण व्यंग्यात्मक उक्तियों में और सत्तासियों की दो मुँहीं राजनीति पर प्रसिद्ध नारायण सिंह बड़ी सहजता के साथ व्यंग्य करते है –

हुकूमत का हाथी नियर दाँत दूगो ,
दिखावे के दूसर चबावे के दूसर।
इ कइसन बा जादू इ कइसन बा टोना,
लिखल जाता दूसर पढ़ल जाता दूसर द्य
कहल जाता दूसर कइल जाता दूसर।[6]

प्रेमपरक, रोमांटिक, भावप्रवणता और चित्रात्मकता मोती बी. ए. के काव्य की विशेषता है। उनकी भावाभिव्यक्ति में दिव्यता है, जो लौकिक सौन्दर्याकन में दीप्त होती रहती है। मोती बी. ए. जिस काव्य युग के प्रणेता है उस दौर के ही कवि है अनिरूद्ध और अर्जुन सिंह 'अशान्त' ।

अनिरूद्ध में भोजपुरी माटी और गँवई प्रकृति के बदलते हुए विविध रूपों का अनूठा चित्रांकन हुआ है। 'पावस" के तो जैसे वे पपीहे ही है। उनका शब्द–संयोजन भाषा की चित्रात्मकता और रूप–विधान, छायावादी कवियों सरीखा प्रतीत होता है। उनकी कविता में भोजपुरी भाषा की तरलता और लोकज संवदेना है जो उन्हें अन्य कवियों से अलग करती है।

साँझ का एक चित्र और उसमें अन्तर्निहित अर्थव्यंजना देखिए, भूख, गरीबी, लाचारी और टूटी मड़ैया के बाहर खड़ी पत्नी और बच्चे पति और पिता के आने की प्रतीक्षा कर रहे है, जबकि साँझ का झुटपुटा पूरी तरह फैल चुका है और बाजार उमड़ चुका है

टुटही मड़्डया के अइसन कहानी

अदहन के पानी में खउठले जवानी
रोवेला छवड़वा मजुरवा मेहरिया
देखे बजर्या के राह
सँझियां के उसरल बाजार।।

विमलानन्द सरस्वती ने अपने सशक्त प्रबन्ध काव्य 'बउधायन" में भोजपुरी के नए काव्य शिल्प कीं नींव रखीं है। कल्पना शक्ति रागबोध और सौन्दर्य चेतना कीं दृष्टि से तो वह सृमद्ध कवि है ही सामाजिक यथार्थ और प्रगतिगामी भावधारा से संपृक्त होने के कारण उनकी कविता अर्थिक प्रासंगिक और सार्थक लगती है। वे नए यथार्थ का सजीव रूप सामने लाते हैं और विसंगतियों पर भी चोट करते हैं –

जाँगर बेंचिं मजूरी कइलीं,
सेर पसर मुठठी पर पवलीं
गोड़ तोरि के चहुँपलि आफति,
थाकल ठेहुन अँखिया भइया,
अइसन कठिन गिरानी आइल,
परलि चकोह मभँवर में भइया ।

रागात्मक अनुभूति की कोमल व्यंजना और कल्पनाप्रवणता , भावात्मकता भोजपुरी के अधिकांश कवियों में रहीं है। पाण्डेय कपिल, जगन्नाथ जैसे कुछ कवि ऐसी श्रेणी में आते हैं जिसके काव्य–संकलनों के परिप्रेक्ष्य में यह बात स्पष्ट होतीं है। 'भोर हो गइल" पाण्डेय कपिल ने गीत, गजल और मुक्त छन्द का संकलन है। पांडेय कपिल अनुभव सिद्ध कवि है। उनकी अभिव्यक्ति में जो गहराई आती है वह देखने योग्य होती है। इसी प्रकार उनका प्रकृति

चित्रण भी प्रभावी है।
नेह ढ़रकत रहल आँख का राह से
दिल के गगरीं भरल रहि गइल।[7]
आँगन के हरसिंगार दुअरा के महुआ जस
चू – चू के मारी पर अलपना सजा गइल।

जगन्नाथ के 'पाख सतरंगी" में संकलित मधुर गीत उनकी एकनिष्ठता, आत्मानुभूति और गहरा भावबोध उनकी अभिव्यक्ति क्षमता को दर्शाते हैं। पारम्परिक लोक छन्दों का भी उन्होंने सफल प्रयोग किया है। सन्दर्भ, चित्रों रूप और भाव–चित्रों से सजे उनके गीतों में

अनुभूति की तीव्रता और गहराई दोनों झलकती है।

प्रासंगिक शब्द संयोजन भाषा की बुनावट और लोक प्रचलित संकेतों के जरिए ग्रीष्म के यथार्थ की अभिव्यंजना देखिए –

मधुबन झँउसि गइल पुलवन के,
झाँवर भइल सुरितया,
कुअना गइल पताल,
ताल तलइन के दरिकलि छतिया
सिंकुरि–सिकुरि अझुराइल बदरा,
गतरे गतर सेवार के
पानी उतरल धार के।।

भोजपुरी कविता के एक समर्पित कवि अविनाश चन्द्र "विद्यार्थी! हैं। विद्यार्थी जी ने अपने कवि कर्म की ईमानदार घोषणा अपनी एक लम्बी कविता में की है। चौपाई, दोहा, वरवै जैसे छन्दों में उनकी काव्य भाषा का सहज प्रवाह, गतिमयता और प्रभावान्विति देखने योग्य है।

अब ना मूँदवि आँखि हम कहबिं खोलि के कंठ ।
गर जाँतल करिहें इहां कबले सूखल संठ ।
चरखा कातबि, करघा गाड़बि,
सरदी, गरमी , बरखा आड़बि,
अधनंगा के राखबि परदा
मुँहदुब्बर के पोंछवि गरदा,
नइखे लूरि भरे के गगरी
बान्हल बा लँगटा के पगरी।[8]

भोजपुरी कविता में शिल्प और भाषा की बुनावट के स्तर पर पारम्परिक रचनाओं से अलग हटकर रचना करने वाले कई ऐसे कवि है, जिनकी कविता में प्रयोगधर्मिता और नव अभिव्यक्ति की छटपटाहट दिखाई पड़ती है। रचना में बिम्बों और सांकेतिक प्रतीकों के माध्यम से इन कवियों ने भोजपुरी कविता को नए–नए अयाम देने का प्रयास किया है। सतीश्वर सहाय "सतीश', उमकान्त वर्मा, रिपुसूदन श्रीवास्तव, विश्वरंजन आदि जैसे गीतकार है, दूसरी ओर शारदानन्द प्रसाद, पाण्डेय सुरेन्द्र, ब्रजकिशोर, सत्यनारायण आदि जैसे मुक्त–छन्द के कवि।

प्रयोगधर्मी कवियों के नवगीत में ग्राम, प्रकृति और जन–जीवन का नया भावबोध और अभिव्यक्ति का नया तेवर देखने को मिलता है। लयात्मक उनका वैषिष्टय है। उमाकान्त वर्मा इस दौर के ऐसे कवि हैं, जिनकी रागात्मक अनुभूति, छोटे–छोटे भावचित्रों के गुम्फन से प्रकट होती है और अपनी लयात्मक गतिमयता बनाए रखती है। भाव और विचारों का समन्वय उनके बोध को ओर गहराता है। फागुन के रूप–चित्र उकेरते समय वे विभिन्न सन्दर्भों से आलोकित

होकर नई अर्थ छवियां उत्पन्न करते हैं –
ललकी किरिनिया के डेंगिया में बइठल
जुड़वा खोलत मुसुकाय
जुड़वा तोपाइल दहकत देंहिया
अगिया पियत भहराय,
सँसिया के बहे जे बयार
सखि रे, धरती के मरे अँकवार ।

भोजपुरी कविता के नया उठान में, शिल्प के स्तर पर हिन्दी जैसा परिवर्तन जरूर हुआ है। जैसे बात–चीत के ढंग या लय पर कविता–कहानीपन या नाटकीयता के समिश्रण से एक अलग किस्म का सृजनात्मक प्रभाव छोड़ रहा है। पढ़ते या सुनते उसके अंदरूनी लय चाहे वह शब्द योजना के कारण हो या अर्थलय के कारण बरकरार रह रहा है। जन–जीवन से कटता जा रहा परिवार गाँव या प्रकृति की स्थिति को कवि

सीधा–सादा सन्दर्भ चित्र और सांकेतिक शब्दों से उकेरता है। अपने गहरे अनुभूतियों को व्यंजित करने के लिए वर्तमान के इतिहास बोध के साथ जोड़कर उसके विद्रूप यथार्थ को दिखाने की कोशिश कर रहा है –

अपने दाँते आपन गाल,
पहिलहूँ धरा जाता रहे
'पहिलहूँ लोरात रहे,
पेट पहिलहूँ पहाड़ रहे
आदमी कीले पर पिसात रहे
लोर का साथे जँतसार रहे .....
अब त कल्प बदल गइल बा
एक दिन खबर आइल,
कि आदमी एहसे मरि गइल ,
कि खाये में तुलसीदल पड़ि गइल।[9]

भोजपुरी कविता शिल्प या संरचना के लिए दूसरी भाषा– के प्रचलित रूप को सहजता से अपनाये हुए हैं। सानेट, गजल, फ्री–वर्स आदि रूप भोजपुरी कवि अपने संस्कार के साथ अपनाए हुए है। गजल तो भोजपुरी में बहुत पहले से ही लिखा जा रहा था। कई गजल, गीतकार इसको अपने मौलिक अंदाज में पूरा–पूरा अपना चुके हैं।

भाषा के कसाव, मिठास, तेवर या धार के लिहाज से गजल का शिल्प बहुत अनुशासन की माँग करता है –

हर जगह बालू के बा पसरल समुन्दर दूर तक
दूर से आइल ई पातर धार फँस के रह गइल ।।[10]
आग लागल बा पेट में अइसन
कौर कुत्ता के छिनाये लागल ।
घर में सरम के चीर सब नोचा–चोंथा रहल,
परदा मगर दुआर पर लटका रहल बा लोंग ।
मँजिल के कुछ पता ना ना राह के खबर,
तरकुल का छांह में मगर सुस्ता रहल बा लोग ॥[11]

निष्कर्ष –

बनारस परिवेश के भोजपुरी लोक साहित्य का अवलोकन करने के पश्चात् शोधार्थी इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि हिन्दी साहित्य में भोजपुरी साहित्य का एक उच्च स्थान है। भोजपुरी लोकगीतों समृद्ध भाषा–शिल्प सौन्दर्य अद्भूत है, जिसने सभी नामचीन लेखकों को अपनी ओर आकर्षित किया है। हिन्दी साहित्य में विशिष्ट स्थान रखने वाले कवि व लेखकों ने भोजपुरी भाषा में अपने साहित्य का सृजन किया है, जो कि भोजपुरी साहित्य के लिए गौरवपूर्ण है। भोजपुरी कविता अपनी भाषिक बनावट व शिल्प विधान और रागबोध, लालित्य, लयात्मकता चित्रात्मकता एवं अर्थगाभीर्य, सहजता और जितयार भाषिक शक्ति के कारण अपनी एक अलग पहचान बनाये हुए है।

सन्दर्भ सूची –

1. भोजपुरी वैभव, पृ.सं. 12
2. भोजपुरी वैभव, पृ.सं. 13
3. दस्तावेज अंक–66, पृ.सं. 5
4. पुरइन पात, पृ.सं. 92
5. पुरइन पात, पृ.सं. 93
6. समकालीन भोजपुरी साहित्य अंक–1, पृ.सं. 53
7. समकालीन भोजपुरी साहित्य अंक–1, पृ.सं. 57
8. कौशिकायन, पृ.सं. 156
9. भोजपुरी विकास स्मारिका, पृ.सं. 57
10. भोजपुरी विकास स्मारिका, पृ.सं. 59
11. भोजपुरी विकास स्मारिका, पृ.सं. 62

RRIJM 2015, All Rights Reserved